International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 04-05-2025, Accepted: 03-06-2025, Published: 19-06-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 65-66

किसान जीवन का यथार्थ चित्रणः साहित्य की दृष्टि से

डॉ. सरोजनी कोशले
अतिथि व्याख्याता, हिंदी विभाग, भाास. नवीन महाविद्यालय बिर्रा, जांजगीर चाम्पा, छत्तीसगढ, भारत

सारांश
किसान जीवन, साहित्य की दृष्टि से देखा जाए तो एक यथार्थवादी और जटिल विषय है। यह किसान जीवन संघर्ष और गरीबी से तो जुड़ा ही है। साथ सामाजिक – आर्थिक असमानता से जुड़ते हुए प्रकृति से जुड़ाव और जीवन की आशावादिता का एक मिश्रण है। साहित्य में किसान जीवन का चित्रण अक्सर ग्रामीण परिवेश, कृषि कार्य, सामाजिक व्यवस्था के साथ किसान तथा उसके पारिवारिक रहन सहन, खान–पान व्यवहार आदि की प्रतिक्रिया को दर्शाता है। साहित्य के माध्यम से किसान जीवन को समझना सुविधा पूर्वक होता है। भारत किसान प्रधान देश होने के बावजूद भी किसानों के निजि जीवन के लिए तथा उसके अंतः द्वन्द्व भावना को समझने के लिए साहित्य एक सशक्त माध्यम है। किसान कथा से किसान के सोच विचार उसकी आवश्यकता आदि को लेखक के माध्यम से रूचिपूर्वक रचनाकर कर साहित्य का सहारा लेकर समाज के सामने प्रस्तुत करता है।

मूल शब्दः संघर्ष, जमीदार, आशावादिता, प्रकृत, जुड़ाव

साहित्य में किसान जीवन का यथार्थ चित्रणः किसान जीवन का यथार्थ चित्रण साहित्य के माध्यम से समझा जा सकता है। साहित्य में उपन्यासों, कहानियों से तथा कविताओं से इनको समझा जा सकता है।

उपन्यासों के माध्यम से किसान जीवन का यथार्थः उपन्यासों में किसान जीवन की बात करें तो प्रेमचंद्र जी के ''गोदान'' उपन्यास प्रमुख है। इसमें किसान जीवन का व्यापक चित्रण किया गया है। इसमे किसान के गरीबी, संघर्ष को भलि–भाँति दर्शाया गया है। कैसे एक गरीब किसान अपने जरूरत की पूर्ति को पूरा नही कर पाता फिर भी अपने शौक के बारे में सोचना है। ग्रामीण जीवन का अच्छे से सादगी पूर्वक जीवन निर्वाह को इस उपन्यास में वर्णन किया गया है। इन्सान आशा–आशा में ही अपना पूरा जीवन निर्वाह कर लेता है। परन्तु अंतिम दम तक स्थिति में कोई सुधार नही हो पाता हें। ''भारतीय किसान अपनी सामाजिक स्थिति, परम्पराओं ओर रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है।''[1] इसी कारण वह इस पिछड़ेपन तथा असमानता को अपना भाग्य मान बैठता है। साहित्य में प्रेमचन्द्र जी के अलावा कई उपन्यासकार अपने लेखन के माध्यम से किसान जीवन को उकेरने का प्रयास किया है। परन्तु प्रेमचन्द्र जी ने किसानों के इस पिछड़ेपन का बखूबी वर्णन करते हुए 'निरक्षरता की दुहाई' शीर्षक पर लिखे हैं– ''हमारे किसानों की निरक्षरता की दुहाई देना एक फैशन–सा हो गया है, लेकिन किसान निरक्षर होकर भी बहुत से साक्षरों से ज्यादा चतुर है।''[2] हिन्दी उपन्यासो के शुरूआती दौर में प्रेमचन्द्र जी किसानों को केन्द्र मे रखकर उपन्यासों की रचना करते थे। प्रेमचन्द्र जी के प्रेमाक्षय नामक उपन्यास में भी किसान जीवन का यथार्थ वर्णन किया गया है। किस प्रकार जमींदारों द्वारा किसानों पर किया जा रहा शोषण का चित्रण किया है। प्रेमचन्द्र के बाद राही मासूम रजा ने अपने प्रथम उपन्यास 'आधा गॉव' में उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल के गॉवों में रहने वाले मुसलमानों जमींदारों और मध्यमवर्गीय किसान जीवन का वर्णन किया है। गिरिराज किशोर के उपन्यास 'इन्द्र सुन नाम उपन्यास में एक अमीर वर्ग के लोग सुख–सुविधाओं के साथ जीवन निर्वाह कर रहा है, तो दूसरी ओर गरीब किसान और मजदूर अशिक्षा, गरीबी में अपना जीवन जी रहा होता है। कृष्णा सोन जी ने अपने उपन्यास 'मित्रो मरजानी' तथा जिन्दगी नामा में पंजाब के किसानों का जीवन चित्रण किया है। जगदीश चन्द्र ने भी किसानों के यथार्थ को उजागर किया है। अपने उपन्यास 'मुठ्ठी भर कंकर' मे। ऐसे ही अनेक उपन्यासकार ने अपने उपन्यासों के माध्यम से किसान जीवन के यथार्थ को समाज के सामने प्रस्तुत किया है।

कहानियों के माध्यम से किसान जीवन का यथार्थ चित्रणः हिन्दी कहानियों के माध्यम से किसान जीवन का संघर्ष उसकी आशाऍं और उसकी समस्याओं तथा वास्तविक जीवन को समझा जा सकता है। कई कहानिया है हिन्दी साहित्य में जो किसानों के जीवन की विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया है। जिसमें मुंशी प्रेमचन्द्र जी के 'कफन' नाम कहानी में किसान जीवन के संघर्ष को दिखाया गया है। इस कहानी में एक यथार्थवादी कहानी को प्रस्तुत किया है। जो समाज में व्याप्त शोषण व्यवस्था उनके दुष्परिणामों को सशक्त ढंग से अभिव्यकत किया गया है। ''कहानी कफन झोपड़े के द्वार पर बाप और बेटो दोनो एक बुझे हुए अलाव के सामने चुपचाप बैठे हुए है, और अन्दर बेटे की जवान बीवी बुधिया प्रसव वेदना में पछाड़ खा रही थी।''[3] इस कहानी में श्रमिक किसान वर्ग के गरीबी का यथार्थ चित्रण हुआ है। प्रेमचन्द्र जी के अन्य कहानियॉ जैसे कि – सज्जन, ईद, श्याम सुन्दर इत्यादि कहानियॉ में भी किसान जीवन की त्रासदी का यथार्थ चित्रण हुआ है। 'फुस की रात' कहानी में एक गरीब किसान के हल्कू की जीवन संघर्ष के बावजुद जीवन में आशा बनाए रखने की प्रेरणा देती है। हिन्दी साहित्य में किसान के यथार्थ चित्रण को प्रस्तुत करने के लिए बहुत सारी कहानियॉ है। जो किसान के मनोवैज्ञानिकता तथा वास्तविकता को प्रदर्शित करती है।

कविताओं के माध्यम से किसान जीवन का यथार्थ चित्रणः हिन्दी साहित्य के काव्य विधा बहुत प्राचीन है। हिन्दी साहित्य में अनेक कवियों ने अपनी कला कृतियों के माध्यम से किसान जीवन का यथार्थ वर्णन किया है। गोस्वामी तुलसीदास जी, सूरदास, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, मैथिलीशरण गुप्त, नागर्जुन, त्रिलोचन केदारनाथ, रमेश रंजक, हीराचन्द्र पाठक आदि कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से किसान जीवन के दशा का वर्णन किया है। तुलसीदास जी ने अपन रचना कवितावली में अपने समय में समाज को वास्तविक स्थिति को प्रदर्शित किया है। और कहा है ''आज किसान के पास खेती नही है, और भिखारी को भीख नही है।'' खेती न किसान को, भिखारी को न भीख भलि, बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।''[4]

मैथिलीशरण गुप्त का भी महान योगदान रहा है इन्होने अपनी कविता 'हेमंत' में बेचारा किसान अपने खून पसीने से फसल उगाता है, बताया है। लेकिन महाजन लोग उसकी सारी फसल को हड़प लेता है। उसकी कमाई पर बाकी सब लोग मजे करते है। बेचारा किसान इतनी मेहनत करने के बाद भी भरपेट खाना खाकर नही सो पाता है–''हे मन्त में बहुत धनो से पूर्ण रहता व्योम हैं, पावस निशाओ मे हसता शब्द का सोम है। हो जाये अच्छी भी फसल, पर लाभ कृषको को कहां खाते, खवाई, बीच ऋण से हैं रंगे रक्खे जहां''[5] सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपनी कविता कुत्ता भौकने लगा मे बताया कि किसान का जीवन कितना कष्टमय होता है जब मौसम की वजह से उसकी फसल बर्बाद हो जाती है। आज ठण्डक अधिक है बाहर ओले पड़ चुके है। गेहू के पेड़ ऐसे खडे है, खेतिहरों मे जान नही। वैसे ही कवि रमेश रंजक ने अपनी कविता मे किसानो की गौरव गाथा का वणर्न करते हुए कहा है कि किसान बहुत मेहनत करता है– हम धरती के बेटे बड़े कमरे है। भरी थकान मे सोते फिर भी उठते बड़े सवेरे है। हिन्द कवि हरीशचन्द्र पाण्डेय ने अपनी कविता किसान और आत्महत्या में किसानो की यथार्थ स्थिति को बताते हुए कहा कि आज किसान इतना मजबूर क्यों है कि वह आत्महत्या जैसे कदम को उठाने को तैयार हो गया है उन्हे धर्मगुरूओं ने बताया प्रवचनो मे आत्महत्या करने वाला सीधे नक जाता है तब भी उन्होने आत्महत्या की क्या नक से भी बदत्तर हो गई थी उनकी खेती

निष्कर्ष

हिन्दी साहित्य में मुख्यतः कविता कहानियॉ और उपन्यासों में किसान जीवन की त्रासदी की का विस्तार से चित्रण किया गया है। किन्दी साहित्य के स्वर्ण काल से लेकर आधुनिक युग के महान कवियों ने किसान को केन्द्र में रखकर काव्य रचना की है। उपन्यास विधा में उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र से लेकर नागार्जुन, रेणू, राही मासम रजा तक सभी उपन्यासकारो ने किसान जीवन की त्रासदी का यथार्थ चित्रण किया है। मानव सभ्यता के विकास में कृषि की अमूल्य भूमिका रही है। मानव का अस्तित्व ही कृषि पर आधारित है। लेकिन आज के समय में किसान की हालत खराब हो गई है। ऐसे मे एक सच्चे साहित्यकार का कर्तव्य होता है कि वह यथार्थ का निष्पक्ष चित्रण करें।

संदर्भ सुचि

1. गोदान, मुंशी प्रेमचन्द्र, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
2. निरहाता की दुहाई, मुंशी प्रेमचन्द्र वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
3. कफन' मुंशी प्रेमचन्द्र जामिया प्रकाशन दिल्ली।
4. ''कविता वली'' तुलसीदास भारतकोश, ज्ञान हिन्दी महासागर।
5. ''हेमंत'' मैथिलीशरण गुप्त, सरस्वती पत्रिका।